॥ अनुक्रमणिका ॥

विषय पृष्ठ सं.

॥ अध्याय - तृतीय ॥

1. शिवपंचाक्षरस्तोत्रम् 50
2. परमेश्वर - स्तुति 51
3. प्रेम ईश्वर है 52
4. हिम्मत - ए - मर्दा , मदद - ए - खुदा 53
5. आत्मा ही परमात्मा है 53
6. आज का युग 55
7. परमात्मा का दण्ड क्षेत्र - नरक 56
8. यहीं तेरा घर है, यहीं तेरा मंदिर 59
9. शिवभक्त कवच - भक्त की सुरक्षा 60
10. कर्म 63
11. पुष्प , अन्न और जल से कामना की पूर्ति 65
12. परमात्मा 67
13. गाते चलो , मुस्कराते चलो 68

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवपंचाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥

वसिष्ठकुम्भो[redacted]वगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥

य (क्ष) ज्ञस्वरुपाय जटाधाराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

II SHIVBHAKTT M AN II

॥ इति ॥

॥ परमेश्वर - स्तुति ॥

कर्पूरगौरं करूणावतारं , संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा वसंतम् हृदयारविन्दे , भवं भवानी सहितं नमामि् ॥

भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमहि ।

उग्राय उग्रनाशाय सर्वाय शशिमौलिने ॥

नमः परमदेवाय नमः परमहेतवे ।

नमः शिवाय शान्ताय नमः शिवतराय ते ॥

II SHIVBHAKTI PURAN II

शिवे भक्तिः शिवे भक्तिः शिवे भक्तिर्भवे भवे।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम॥

॥ प्रेम ईश्वर है ॥

जहाँ प्रेम है, वहीं परमात्मा रहता है। प्रेम से ही दिलों को जीता जाता है। दिलों को जीतकर दिलों के राजा बने। प्रेम आत्मा की खुशी के लिए है और सेक्स शरीर के खुशी के लिए है। प्रेम अनन्त काल तक रहता है। सेक्स कुछ ही समय तक रहता है। शरीर को तो मरने के बाद लाठियों से पीटा जाता है। कुछ भाग तो मछलियों को खाने के लिए दिया जाता है। शरीर असत्य है। आत्मा सत्य है। प्रेम सत्य है। अपनी आत्मा को परम आत्मा अर्थात् परमात्मा बनायें।

आत्मा अजर अमर है। प्रेम और नफरत एक साथ रहते है। प्रेम की शुरूआत नफरत से ही होती है। एक परमात्मा से प्रेम करे। प्रेम में दिल हार जाता है। प्रेम में दिल टूटता है , रूठता है और अंत में दिल की बात जुबां पर आ जाती है। दिल का हारा इंसान जिंदगी का हारा बन जाता है। इंसान मौत को गले लगा लेता है। अगर मौत से जीत गया तो नशे, आदि की सम्पर्क में आ जाता है।

परमात्मा ने जिसे पैदा किया उसे आत्मा की हत्या अर्थात् 'आत्महत्या' करने का हक नहीं है। दिल के साथ - साथ परमात्मा ने मन भी दिया है।

''मन के जीते जीत है मन के हारे हार।'' दिल का हारा तो क्या हारा ? मन तो नही हारा। मन दिल को जीत लेता है अपना मन परमात्मा के चरणों मे लगाये।

दिलों को प्रेम से जीते और अगर दिल हार जाए तो दिल को मन से जीता जा सकता है। यही सत्य है , सत्य है , सत्य है। दिल कमजोर होता है। मन को मजबूत करे। जो परमात्मा से प्रेम करता है। परमात्मा भी उसी से प्रेम करते है।

॥ हिम्मत - ए - मर्दा , मदद - ए - खुदा ॥

इंसान ,कभी - कभी विपरीत परिस्थितियों से हार जाता है। वह कांच के टुकड़े की तरह बिखर जाता है। यहाँ तक कि जीने की चाह भी छोड़ देता है। शरीर भी रहता है। आत्मा भी रहती है। प्राण भी रहता है। फिर भी वह एक लाश की भाँति जमीन पर असहाय पड़ा रहता है। उसी समय जिस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत होती है वह है हिम्मत ,हिम्मत और सिर्फ हिम्मत की।

हिम्मत सोये हुए इंसान को जगाता है , उठाता है और आगे लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। हिम्मत भगवत्गुण है। हिम्मत एक चींटी को भी एक हाथी से सुरक्षित रहने के लिए प्रेरित करता है।

कभी - कभी जीवन से संघर्ष करते - करते हिम्मत भी टूट जाता है, बिखर जाता है। लेकिन हिम्मत को बांधे रखे। उसे मजबूत रखे। हिम्मत ही आपके मंजिल तक साथ निभाने का एकमात्र साथी है।

सब कुछ हारा नही गँवारा।

हिम्मत हारा, जीवन से हारा ॥

|| SHIVBHAKTI MAHAPURAN ||

॥ आत्मा ही परमात्मा है ॥

'' ओम् आत्मने नमः'' हम अपनी आत्मा को नमस्कार करते है।

परमात्मा एक है। 'स द्वितीयमैच्छत्' एक बार परमात्मा के मन में एक से दो हो जाने की इच्छा जागृत हुई। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी से तरह - तरह के खिलौने बनाता है , ठीक उसी प्रकार परमात्मा ने भी पाँच तत्वों - भूमि , गगन, वायु, अग्नि और आकाश यानि भगवान से पशु - पक्षी , पेड़ - पौधे , मनुष्य को रचा। मनुष्य जीता - जागता मिट्टी का खिलौना है। लेकिन जब इनमें कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखी तब उस परमात्मा ने अपना एक - एक अंश अर्थात् आत्मा को एक - एक कण में सीपित किया जिससे वही पशु - पक्षी , पेड़ - पौधे , मनुष्य हँसने - बोलने लगे।

कण - कण पात - पात को रचता और उसी में बसता।

कहे शिवभक्त तेरी जुबां को(प्रभु की वाणी) अमृतरस छलकता॥

यानि आत्मा ही परमात्मा है। सभी समान है , कोई छोटा - बड़ा नहीं है। आत्मा और शरीर दोनों अलग - अलग है। आत्मा बिना शरीर के नहीं रह सकती। जब शरीर जीर्ण - शीर्ण , कमजोर हो जाता है। तब आत्मा एक - न - एक शरीर ग्रहण करती है।

शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है और पाँच तत्वों में ही मिलकर समाप्त हो जाता है लेकिन आत्मा जो परमात्मा का अंश है, वह समाप्त नहीं होता। परमात्मा अजर - अमर है। आत्मा भी अजर - अमर है। आत्मा सत्य है , सनातन है , शाश्वत है। शरीर असत्य है। जब तक आत्मा मलिन रहती है तब तक शरीर भी यात्रा करता रहता है। जब आत्मा पवित्र हो जाती है तब वह पुनः परमात्मा में लीन हो जाती है।

आत्मा एक अग्नि की जलती हुई लौ की भाँति प्रकाशित है। और परमात्मा करोड़ों सूर्यो की भाँति प्रकाशित है। लौ अर्थात् आत्मा सूर्यरूपी परमात्मा में पवित्र होकर लीन हो जाती है। शरीर से मुक्त हो जाती है। मोक्ष सुलभ हो जाता है।

॥ आज का युग ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

आज के युग में जिसके पास धन है, उसी को लोग कुलीन, सदाचारी और सद्गुणी मान रहे है। आज जिसके हाथ में शक्ति है, वही धर्म और न्याय की व्यवस्था अपने अनुकूल करा रहा है। विवाह - सम्बन्ध के लिए कुल - शील - योग्यता आदि की परख नहीं रह गयी है , युवक - युवती की पारस्परिक रूचि से ही सम्बंध हो रहा है। व्यवहार की निपुणता सच्चाई और ईमानदारी में नहीं बल्कि जो जितना छल - कपट कर रहा है ,वह उतना ही व्यवहार कुशल माना जा रहा है। आज ब्राह्मण की पहचान उसके गुण - स्वभाव से नहीं यज्ञोपवीत से हो रही है।

जो घूस देने में या धन खर्च करने में असमर्थ है ,उसे अदालतों से ठीक- ठीक न्याय नहीं मिल रहा है। जो बोलचाल मे जितना चालाक है ,उसे उतना ही बड़ा पंडित माना जा रहा है। आज जो जितना अधिक दम्भ - पाखण्ड कर रहा है ,वह उतना ही बड़ा साधु है। आज बाल आदि सँवारकर कपड़े - लत्ते से लैस होना ही स्नान है। लोग दूर के तीर्थ गंगा - गोमती , माता - पिता की उपेक्षा कर रहे है।

आज जीवन का सबसे बड़ा पुरूषार्थ है - अपना पेट भर लेना। जो जितनी ढिठाई से बात कर रहा है , वह उतना ही सच्चा है। आज धर्म का सेवन यश के लिए किया जा रहा है। आज सारी पृथ्वी पर दुष्टों का बोलबाला हो गया है। अब राजा होने का कोई नियम ही नही है, ब्राह्मण , क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र में जो बली है,वही राजा बन रहा है।

आज के राजा लोभी तो इतने है कि उनमें और लुटेरों में कोई अन्तर ही नहीं है। वे प्रजा की पूँजी और पत्नियों को छीन रहे है। इनसे डरकर प्रजा शहरों से गाँवों ,पहाडों और जंगलों में जा रही है।

आज के युग में वर्षा नही हो रही है ,कभी सूखा पड़ रहा है। तो कभी कर - पर - कर लगाये जा रहे है। कभी कड़ाके की सर्दी पड़ रही है , कभी आँधी चल रही है , कभी गर्मी तो कभी बाढ़ आ रही है। इन उत्पातों से तथा आपस के संघर्ष से प्रजा अत्यन्त पीढ़ित हो रही है ,नष्ट हो रही है।

लोग भूख - प्यास आदि चिन्ताओं से दुःखी हो रहे है। रोगों से तो उन्हें छुटकारा ही नही मिल रह रहा है। आज धर्म में पाखण्ड की प्रधानता हो गयी है। मनुष्य चोरी ,झूठ तथा निरपराध हिंसा आदि नाना प्रकार के कुकर्मो

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

से जीविका चला रहे है। संन्यासी आदि विरक्त आश्रमवाले भी घर - गृहस्थी जुटाकर गृहस्थों का सा व्यापार कर रहे है। जिनसे वैवाहिक सम्बन्ध है, उन्हीं को अपना सम्बन्धी मान रहे है। आज के लोग लोभी ,दुराचारी और कठोर ह्रदय के हो रहे है। गृहस्थ दूसरों को भिक्षा देने के बदले स्वंय भीख माँग रहे है।

पतिं त्यक्ष्यन्ति निर्द्रव्यं भृत्या अप्यखिलोत्तमम्।

भृत्यं विपन्नं पतयः कौलं गाश्चापयस्विनीः ॥

स्वामी चाहे सर्वश्रेष्ठ ही क्यों न हों - जब सेवक लोग देखते है कि इसके पास धन - दौलत नहीं रही , तब उसे छोड़कर भाग जाते है। सेवक चाहे कितना ही पुराना क्यों न हो ,परन्तु जब वह किसी विपत्ति में पड़ जाता है ,तब स्वामी उसे छोड़ देते है।

आज के लोग अपनी कामवासना को तृप्त करने के लिए ही किसी से प्रेम करते है। आज प्राण - रक्षा के लिए रोटी का टुकडा मिलना भी कठिन हो रहा है। आज जीव प्रायः असुर स्वभाव के हो रहे है। आज लोग मूर्ति को ही परमात्मा समझ रहे है। मूर्ति को रचने वाले इंसान है। इंसान को रचने वाले परमात्मा है। जिस समय सम्पूर्ण जीव असत्य के मार्ग पर चले जायेंगे। उसी समय परमात्मा किसी न किसी रूप में पृथ्वी पर अवतार लेंगे।

॥ परमात्मा को दण्ड क्षेत्र - नरक ॥

मनुष्य चार प्रकार के पापों से यमलोक में जाते है। यमलोक में जाते है। यमलोक यानि नरक , परमात्मा का दण्ड - क्षेत्र है। नरक अत्यन्त भयदायक और भयंकर है। वहाँ समस्त देहधारियों को विवश होकर जाना पड़ता है। पृथ्वी से छियासी हजार योजन की दूरी पर नरक है। जो धर्मात्मा मनुष्य है , वे मानो यमराज के मित्र के समान है।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

यमराज के नेत्र टेढ़ी , केश ऊपर को उठे हुए, दाढ़ी - मूँछ बड़ी - बड़ी , ओठ ऊपर की ओर फड़कते रहते है। उनके अठारह भुजाएँ होती है। वे कुपित तथा काले कोयलें के ढेर से दिखाई देते है। उनके हाथों में सब प्रकार के अस्त्र - शस्त्र उठे होते है। वे पापियों को डाँटते रहते है। यमराज के नेत्र अग्नि के समान होते है और मुँह से आग उगलते है।

यमराज के पास मृत्यु देवता, काल देवता, महामारी ,कालरात्रि अनेक प्रकार के रोग, कुष्ठ, मूर्तिमान हो हाथों में शूल, चक्र , पाश और खड्ग लिए खड़े रहते है। ऐसे परिवार से घिरे हुए घोर यमराज तथा चित्रगुप्त को पापी प्राणी देखते है। यमराज उन पापियों को बहुत डाँटते हैं और भगवान चित्रगुप्त उन्हें समझाते है।

विभिन्न पापों के कारण मिलने वाली नरक यातना का वर्णन इस प्रकार है।

जो पाखण्डियों के शास्त्र में प्रवृत्त होता है , वह द्विजिह्व नामक नरक में जाता है और जीभ के आकार में आधे कोस तक फेले हुए तीक्ष्ण हलों द्वारा वहाँ पीड़ा दी जाती है। जो मनुष्य माता - पिता और गुरू को डाँटता है, उसके मुँह में कीड़े ठूँसकर पीटा जाता है। जो मनुष्य मंदिर , बगीचे,बावड़ी , कूप , तालाब तथा ब्राह्मण के स्थान को नष्ट -भ्रष्ट करता है, वे कोल्हू के द्वारा नरक में पेरे और पकाये जाते है। जो सत्पुरूषों की निन्दा सुनते है ,उनके कानों में लोहे की कीलें आग से तपाकर भर दी जाती है। फिर गरम दूध ,गरम तेल कानों में डाला जाता है। जो माता - पिता के प्रति भौहें टेढ़ी करते है , हाथ उठाते है। उनके मुखों को अन्त तक लोहे की कीलों से भर दिया जाता है। जो मनुष्य लुभाकर स्त्रियों की ओर अपलक दृष्टि से देखते है ,उनकी आँखों में तपाकर आग के समान लाल की हुई सूइयाँ भर दी जाती है।

जो मनुष्य धर्म का उपदेश देने वाले गुरू ,भक्तों की निन्दा करते है ,खिल्ली उड़ाते है उनके सम्पूर्ण अंगों में लोहे की कीलें मुद्गरों से ठोकी जाती है। फिर घाव पर नमक छिड़का जाता है। उस समय उन्हें बहुत कष्ट होता है । जो मनुष्य शिव मंदिर के पास ,देवता के बगीचे में मल- मूत्र का त्याग करते है , उनके लिंग को लोहे की मुद्गरों से चूर कर दिया जाता है और उसमें सूइयाँ भर दी जाती है। सबको लूटते - लूटते कहीं एक दिन भक्त को भी लूट लिया तो उसी दिन उसका नरक में जाना उस मनुष्य का तय हो जाता है।

धने सत्यपि ये दानं न प्रयच्छन्ति तृष्णया ॥

अतिथि चावमन्यन्ते काले प्राप्ते गृहाश्रमे।

तस्मात् ते दुष्कृतं प्राप्य गच्छन्ति निरयेऽशुचौ ॥

जो धन रहते हुए भी तृष्णा के कारण उसका दान नहीं करते और घर पर आये हुए अतिथि का अनादर करते है, वे पाप का फल पाकर अपवित्र नरक में गिरते है।

जो सदा झूठ बोलता है ,वह रौरव नरक में जाता है। जो भ्रूण की हत्या ,सोने की चोरी कराने वाला ,विश्वासघाती, शराबी,ब्रह्महत्यारा, दूसरों को धन को लूटने वाला तप्तकुम्भ नरक में गिरता है। साध्वी स्त्री को बेचने वाला, अधिक ब्याज लेने वाला, बाल बेचने वाला ,तप्तलोह नरक में पकाये जाते है। जो वेद की निन्दा

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

करते है ,वे लवण नामक नरक में गिरते है। चोर विलोहित नामक नरक में गिरता है। मर्यादा को दूषित करने वाले भी इसी नरक में गिरते हैं।

जो शराब या अन्य मादक पदार्थ बेचते है , वे रूधिरौघ नामक नरक में गिरते है। जो छल -कपट से जीविका चलाते है ,वे कृत्य नामक नरक में जाता है। पशुओं की हिंसा करने वाले कसाई वह्निज्वाल नरक में गिरते है। बलात्कारियों के लिंग को लोहे की मुद्गरों से कूँचा जाता है।

अधिक क्रोध करना ,घमंड करना ,कंजूसी करना ,परस्त्रीसमागम ,श्रेष्ठ कुल की कन्याओं को कलंकित करना ,स्त्री - पुरूषों का विक्रय करना ,स्त्रियों के अत्यन्त वशीभूत होना ,स्त्रियों की रक्षा न करना ,छल से परायी स्त्री का सेवन करना ,जो कामवश शराब पीना ,हिंसा के प्रेमी ,छल से शासन करने वाले ,जो दुर्बल और रोगियों पर कृपा नही करते वे मूढ़ नरक में गिरते है। जो दूसरों को दण्ड देने में रूचि रखता है। मनमाना कर वसूलता है वह राजा नरक में पकाया जाता है।

कुल एक सौ अड़सठ नरक है। नरक में सिर नीचे करके लटकाये गये प्राणि स्वर्गलोक में रहने वाले देवताओं को देखा करते है। जीतने जीव स्वर्ग में है , उतने ही नरक में है। नरक से बचने के लिए भगवान शिव को याद करना आवश्यक है। जो पुरूष भक्तिभाव से दिन - रात भगवान शिव का स्मरण करता है। वह कभी नरक में नहीं पड़ता।

नरक और स्वर्ग - ये पाप और पुण्य के ही दूसरे नाम है। इनमें से एक तो दुःख देने वाला है और दूसरा सुख देने वाला। जब एक ही वस्तु कभी प्रीति प्रदान करने वाली होती है और कभी दुःख देने वाली बन जाती है। तब यह निश्चय होता है कि कोई भी पदार्थ न तो दुःखमय है और न सुखमय ही है। ये सुख - दुःख तो मन के विकार है। ज्ञान ही परब्रह्म है। यह सारा चराचर विश्व ज्ञानमय ही है। उस परम विज्ञान से भिन्न दूसरी कोई वस्तु नहीं है।

॥ यहीं तेरा घर है, यहीं तेरा मंदिर ॥

घर ही मंदिर है। घर और मंदिर में कोई अंतर नहीं है। घर में इंसान पूजे जाते है और मंदिर में भगवान। मंदिर का बनाने वाला इंसान भगवान से भी बड़ा है। जब सृष्टि की रचना हुई तो सबसे पहले इंसान आया ,मंदिर नहीं । इंसान अथवा मनुष्य की पूजा मंदिर में बसे भगवान से पहले होनी चाहिए क्योंकि इंसान ने ही मंदिर में भगवान को बसाया।

श्रीमद्भागवत पुराण में भी कहा गया है कि घर ही भोग और मोक्ष का साधन है। कुरान शरीफ में कहा गया है यह जमीन और आसमां खुदा का है। और खुदा जिसे चाहे उसे मालिक बना देता है। खुदा/ परमात्मा यह जरूर देखता है कि हमारे नेक बंदों में से किसके पास रोटी ,कपड़ा ,मकान है और किसके पास नहीं। जिसे

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

जिस चीज की सख्त जरूरत होती है उसे खुदा दे देता है। घर का मिलना, न मिलना मनुष्यों के कर्मो के फलस्वरूप ही है।

उस देश का राजा पूजने योग्य है जिसकी प्रजा के पास खाने के लिए रोटी ,तन ढकने के लिए कपड़े और रहने के लिए घर है।

अक्सर देखा गया है कि जो व्यक्ति घर खरीदता है , वह खुद उस घर में नही रह पाता बल्कि उसके सगे - संबंधी ही रहते है।

घर में अनेक सदस्य रहते है, उन सदस्यों में से एक उन सभी का हेड अर्थात् एक मुखिया होता है। मुखिया अपने सदस्यों के साथ राय - मशविरा करके किसी बात पर फैसला करता है। जो घर को सुरक्षित रखने के लिए सही कदम साबित होता है।

सभी सदस्यों को भी मुखिया के बातों का प्रेमपूर्वक पालन करना जरूरी है। जिस घर में मुखिया नही हैं या मुखिया की बात नहीं मानी जाती, वह घर अधोगति में चलता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि वह घर ,घर नहीं मंदिर नहीं , अखाड़े का क्षेत्र बन जाता है।

यदि घर में सभी सदस्यों के हृदय में त्याग, प्रेम, समर्पण का भाव एक - दूसरे के प्रति हो तो वही घर स्वर्ग , मंदिर बन जाता है। फिर किसी वाह्य मंदिर की जरूरत नहीं रह जाती। वहीं घर ,वही मंदिर भोग और मोक्ष का साधन जाता है। अतः घर को मंदिर बनाये। घर पृथ्वी पर नहीं लोगो के हृदय में बनाये। परमात्मा के हृदय में अपना घर बनाये।

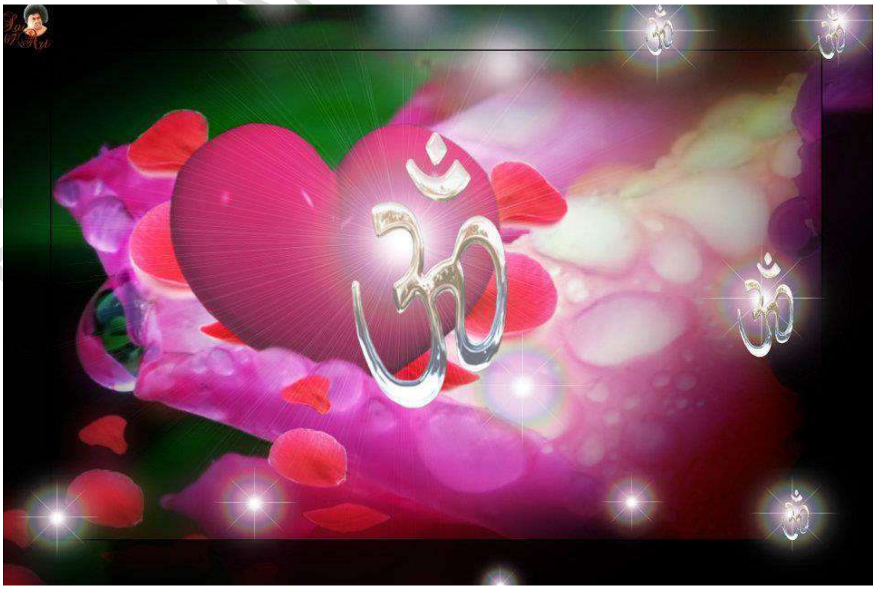

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ शिवभक्त कवच - भक्त की सुरक्षा ॥

भक्तजन ! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायणकवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर ले। उसकी विधि यह है कि हाथ -पैर धोकर आचमन करे ,फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण करके उत्तर मुँह बैठ जाय। इसके बाद कवच धारण करने तक कुछ न बोलने का निश्चय करे। पहले 'ओम् नमो नारायणाय ' इन आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों ,घुटनों ,जाँघों ,पेट हृदय ,वक्षः स्थल ,मुख और सिर में न्यास करे।

तदन्तर ' ओम् नमो भगवते वासुदेवाय ' इस द्वादशाक्षर मंत्र का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनो हाथ की आठ अँगुलियों और दोनो अँगूठों की दो - दो गाँठो में न्यास करे।

फिर ' ओम् विष्णवे नमः 'इस मंत्र के पहले अक्षर 'ओम् ' का हृदय में , ' वि ' का ब्रह्मरन्ध्र में, 'ष्' का भौहों के बीच में , 'ण' का चोटी में , 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गाँठों में न्यास करें। फिर ' ओम् मः अस्त्राय फट् 'कहें। इस तरह इस विधि को जानने वाला पुरुष मंत्रस्वरूप हो जाता है। इसके बाद समग्र ऐश्वर्य , धर्म , यश ,लक्ष्मी , ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण विष्णु भगवान का ध्यान करे और इस कवच का पाठ करे...

भगवान श्रीहरि गरूड़जी की पीठ पर अपने चरणकमल रखे हुए है। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही है। आठ हाथों में शंख , चक्र ,ढाल , तलवार , गदा , बाण , धनुष और पाश धारण किये है। वे ही ओम्कारस्वरूप प्रभु सब प्रकार से , सब ओर से मेरी रक्षा करें॥

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

मत्स्यमूर्ति भगवान जल के भीतर जलजन्तुओं से और वरूण के पाश से मेरी रक्षा करे। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने वाले वामन भगवान स्थल पर और विश्वरूप श्रीत्रिविक्रम भगवान आकाश में मेरी रक्षा करें ॥

जिनके घोर अट्टहास से सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्यपत्नियों के गर्भ गिर गए थे , वे दैत्य - यूथपतियों के शत्रु भगवान नृसिंह किले ,जंगल ,रणभूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें ॥

अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को धारण करने वाले यज्ञमूर्ति वराह भगवान मार्ग में ,परशुरामजी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मणजी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान रामचन्द्र प्रवास के समय मेरी रक्षा करें ॥

भगवान नारायण मारण- मोहन आदि भंयकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। ऋषिश्रेष्ठ नर गर्व से ,योगेश्वर भगवान दत्रातेय योग के विघ्नों से और त्रिगुण अधिपति भगवान कपिल कर्मबंधनों से मेरी रक्षा करें। परमर्षि सनत्कुमार कामदेव से ,हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देवमूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से देवर्षि नारद सेवा अपराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करे ॥ भगवान धन्वन्तरि कुपथ्य से , जितेन्द्रिय भगवान ऋषभदेव सुख -दुःख आदि भयानक द्वन्द्वों से ,यज्ञ भगवान लोक अपवाद से ,बलरामजी मनुष्यकृत कष्टों से और श्रीशेषजी क्रोधवश नामक सर्पो के गण से मेरी रक्षा करें ॥ भगवान श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास जी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्मरक्षा के लिए महान अवतार धारण करने वाले भगवान कल्कि , पापबहुल कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें ॥

प्रातः काल भगवान केशव अपनी गदा लेकर ,कुछ दिन चढ़ आने पर भगवान गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर ,दोपहर के पहले भगवान नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें ॥

तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव सूर्यास्त के बाद ऋषिकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान पद्मनाभ मेरी रक्षा करें ॥ रात्रि के पिछले प्रहर में श्रीहरि , उषाकाल में भगवान जर्नादन ,सूर्योदय से पूर्व श्री दामोदर और सम्पूर्ण संध्यायो में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें ॥

सुदर्शन ! आपका आकार चक्र - की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलयकालीन अग्नि के समान अत्यन्त तीव्र है।

आप भगवान की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते है। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास - फूस को जला डालती है , वैसे ही आप हमारी शत्रु - सेना को शीघ्र - से - शीघ्र जला दीजिये ,जला दीजिये ॥

कौमोद की गदा !आपसे छूटने वाली चिनगारियों का स्पर्श वज्र के संमान असह्य है। आप भगवान अजित की प्रिया है और में उनका सेवक हूँ। इसलिए आप कूष्माण्ड ,विनायक , यक्ष, राक्षस ,भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिये , कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर - चूर कर दीजिये ॥

॥ SHIVBHAKT MAHAPURAN ॥

शंखश्रेष्ठ ! आप भगवान श्रीकृष्ण के फूँकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान , प्रमथ ,प्रेत , मातृका ,पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयानक प्राणियों को यहाँ से झटपट भगा दीजिये ॥

भगवान की प्यारी तलवार ! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न - भिन्न कर दीजिये। भगवान की प्यारी ढाल ! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मंडल है। आप पाप - दृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदा के लिए अंधा बना दीजिए ॥

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु ,दुष्ट मनुष्य सर्पादि रेंगने वाले जन्तु, हिंसक पशु ,भूत - प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो - जो भय हो और जो - जो हमारे मंगल के विरोधी हो - वे सभी भगवान के नाम लेने से तत्काल नष्ट हो जायँ ॥ बृहद् रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान गरूड़ और विष्वक्सेन जी अपने नाम -उच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचायें ॥

श्रीहरि के नाम , रूप ,वाहन ,आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि , इन्द्रिय ,मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचायें ॥

जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत है ,वह वास्तव में भगवान ही है - इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायँ ॥

जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके है, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त विकल्पों - भेदों से रहित है फिर भी वे अपनी माया शक्ति के द्वारा भूषण ,आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते है , यह बात निश्चित रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ सर्वव्यापक भगवान श्रीहरि सदा -सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें ॥

जो अपने भंयकर अट्टाहास से सब लोगों के भय को भगा देते है और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते है ,वे भगवान नृसिंह दिशा - विदिशा में , नीचे - ऊपर , बाहर - भीतर - सब ओर हमारी रक्षा करें ॥

भक्तजन ! इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस ,फिर तुम अनायास ही सब दैत्य - यूथपतियों को जीत लोगे। इस नारायणकवच को धारण करने वाला पुरूष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैरों से छू देता है , वह तत्काल समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।

जो पुरूष इस नारायणकवच को समय पर सुनता है और जो आदरपूर्वक इसे धारण करता है ,उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते है। इन्द्र भगवान ने आचार्य विश्वरूप जी से यह विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और त्रैलोक्यलक्ष्मी का उपभोग करने लगे।

इस ' शिवभक्त कवच ' से समस्त विघ्नों का नाश तथा विजय, आरोग्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति व 'शिवभक्त महापुराण ' में अपार श्रद्धा बढ़ जाती है। वह पुरूष शिवजी का अनन्य भक्त हो जाता है। तथा मृत्युलोक को जीतकर सदा - सर्वदा के लिए परमात्मा के चरणों में निवास अर्थात् परमपद प्राप्त करता है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ कर्म ॥

परमात्मा के हृदय में निवास बनाने के लिए जो कर्म किया जाता है , वही कर्म है। कर्म ही प्रधान है। श्रीमद्भागवतगीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कर्म करने की ही प्रेरणा दी है। अगर कर्म एक कदम चलता है तो फल भी एक कदम चलता है। समय आने पर दोनों किसी मोड़ पर टकड़ा जाते है। कर्मो का फल अवश्य मिलता है।

श्रीमद्भागवतगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि कर्म करना तेरा अधिकार है , फल पाना तेरा अधिकार नहीं। तेरा फल तुझे ही मिलेगा। कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

अपने लिए एवं अपने कुटुम्ब के पेट पालने के लिए जो कर्म किया जाता है , वह कर्म नहीं, वह तो कर्तब्य है। आज के युग में लोग कर्तब्य को ही कर्म समझने लगे है। जिस कर्म से मोक्ष का रास्ता प्रशस्त हो वही कर्म है। पूजा ही कर्म है न कि कर्म ही पूजा है। निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ,कार्य नहीं कर्म बन जाता है। मनुष्य ,भगवान यहाँ तक कि परमात्मा भी अनुशासित होकर सावधानीपूर्वक कर्म करते है। आज मनुष्य बिना कर्म के ही फल चाहता है। कर्म करना नहीं चाहता। वृद्धजन भी कर्म करते है। कर्म और फल साथ - साथ चलते है। कर्म एक ऐसी वस्तु है जो शरीर यात्रा को सिद्ध कर देती है, पूर्ण कर देती है। आराधना ही कर्म है।

'अन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः' मोक्ष प्राप्ति की प्रकिया के अतिरिक्त दुनिया में जो कुछ भी किया जाता है, सारा जगत जिसमें रात - दिन व्यस्त है , वह इसी लोक का एक बंधन है, न कि कर्म। कर्म तो ' मोक्ष्यसेऽशुभात् ' - अशुभ अर्थात् संसार बंधन से छुटकारा दिलाने वाला है।

देवता कर्म के मंत्री है, अधीन है। जैसे बालक को मिठाई आदि का लालच देकर औषध खिलाते है, ठीक उसी प्रकार अनभिज्ञों को स्वर्ग आदि का लालच देकर श्रेष्ठ कर्म करने में लगाया जाता है। सभी लोगों के यह कर्म

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

है कि मन , वाणी और शरीर से किसी की हिंसा न करे , सत्य पर दृढ़ रहे , चोरी न करे , काम, क्रोध और लोभ से बचे और जिन कामों के करने से समस्त प्राणियों की प्रसन्नता और भला हो, वहीं कर्म करें।

सात्त्विक कर्मो से ऋषि लोक और देवलोक, राजसी कर्म से मनुष्य और असुरयोनि , तामसी कर्मो से भूत - प्रेत एवं पशु - पक्षी आदि योनियों में जाता है। कर्म के अतिरिक्त और कोई भी किसी को सुख - दुःख नहीं दे सकता। जो कर्म भगवान को अर्पण नहीं किया जाता , वह चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न हो - सर्वदा अमंगलरूप , दुःख देने वाला ही होता है। नेक कर्म करे ताकि कामियाबी मिले। हमारा खुश रहना ही कामियाबी है। सफलता और असफलता भी कर्म पर टिकी है।

कर्म एवं ध्यान करने से क्रमशः साधन पथ में आगे बढ़ने पर शिवजी का दर्शन होता है। मनुष्य अपने कर्मो से महान बनता है। निः स्वार्थ भाव से कर्म करते - करते कर्मयोगी बने। कर्मयोगी का फल कभी निष्फल नहीं होता। बीज से बीज ही मिलता है , कर्म का फल कभी निष्फल नहीं होता। बीज से बीज ही मिलता है , यदि हृदयरूपी जमीन बंजर न हो तब। मनुष्य असफल तभी होता है , जब कर्म करना रोक देता है। कर्मयोगी कभी असफल नहीं होता। कर्म को विस्तृत रूप में जानने के लिए 'यथार्थ गीता ' पढ़े। मृत्यु आने से पहले कर्म करना अर्थात् आराधना करना हरगिज न छोड़े , तभी मोक्ष का फल निश्चित है अथवा नहीं।

॥ पुष्प , अन्न और जल से कामना की पूर्ति ॥

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुत; ॥

मृत्युंजय मंत्र

इस मृत्युंजय मंत्र का जब पाँच लाख जप पूरा हो जाता है, तब भगवान शिव प्रत्यक्ष दर्शन देते है।

विभिन्न पुष्पों, अन्न , जल आदि से ही शिव जी की पूजा करने से लक्ष्मी, सुख,भोग , आनन्द, मोक्ष, पुत्र, यश आदि की प्राप्ति हो जाती है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

आयु प्राप्ति के लिए - एक लाख दूर्वाओं द्वारा पूजन।

पुत्र प्राप्ति के लिए - एक लाख धतूरा का फूल।

भोग और मोक्ष प्राप्ति - एक लाख तुलसी दल।

आभूषण की प्राप्ति - एक लाख दुपहरिया के पुष्प।

वाहन की प्राप्ति - एक लाख चमेली के फूल।

शुभलक्षणा पत्नि प्राप्ति - एक लाख बेला के फूल।

अन्न की प्राप्ति - एक लाख जूही के फूल।

लक्ष्मी जी की वृद्धि के लिए - अखण्डित चावल

स्वर्ग जैसा सुख - जौ से

सुख की प्राप्ति - मूँग से

नपुंसकता दूर करने के लिए - घी

घर में कलह दूर करने के लिए - दूध

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

आनन्द की प्राप्ति - ईख के रस से।

सभी पुष्प , अन्न और जल शिव जी की प्रतिमा अथवा शिवलिंग पर चढ़ाये। इससे भक्तों की सभी कामनायें पूरी होती है। एक लाख बेलपत्र चढाने पर मनुष्य अपनी सारी काम्य वस्तुएँ प्राप्त कर लेता है। सभी पुष्प ,अन्न और जल 'ओम्' मंत्र से ही चढ़ाये।

॥ परमात्मा ॥

मैं ही जल ,वायु ,आकाश ,पृथ्वी अग्नि हूँ। मैं आकाश की तरह शान्त हूँ, वही शांति तेरे ह्रदय में है। मैं तेरे आकाशरूपी ह्रदय मे हूँ। मुझे पाना बहुत ही आसान है। मैं किसी भी चीज से नहीं मिलता। मिलता हूँ तो सिर्फ प्रेम , प्रेम और प्रेम से। जैसे जल अपनी एक - एक बूँद को समेट कर सागर बन जाता है वैसे ही सभी जीव मुझमें ही समाये हुए है। मैं जल हूँ। प्रलयकाल में एक चिनगारी विशाल अग्नि का रूप धारण कर लेती है वैसे ही सभी जीव मुझमें ही मिल जाते हैं। तू भी ब्रह्म है ,मैं भी ब्रह्म हूँ। एक ब्रह्म यदि दूसरे ब्रह्म को सताये तो , यही पाप है।

मैं ओम्कार हूँ। तू पृथ्वी जो एक गेंद की तरह हैं उस पर है। मेरे पास तो कितनी गेंदे है। ब्रह्मांड तो तेरे सिर में हैं। जैसे वायु को तुम देख नहीं सकते , लेकिन महसूस कर सकते हो। ठीक उसी प्रकार तू मुझे देख नहीं सकता , केवल महसूस कर सकते हो। हर जगह मेरी कनेक्टिविटी है। मेरा और तेरा सिर्फ प्रेम का रिश्ता होता है। मैं सदा तेरे

साथ रहता हूँ। मेरे हाथ ही दिशाएँ हैं। मैं प्रकाश हूँ। अंधकार भी। मैं तुझमें हूँ और तू मुझमें है। मैं सर्वशक्तिमान हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ।

॥ गाते चलो , मुस्कराते चलो ॥

गाते चलो ,मुस्कराते चलो।

जय - जयकार लगाते चलो॥

आगे बढ़ो , चलते रहो।

जय - जयकार लगाते रहो॥

दर्शन करो ,खुशियाँ भरो।

जय - जयकार लगाते रहो॥

आगे बढ़ो ,बढ़ते रहो।

जय - जयकार लगाते रहो॥

गाते चलो ,मुस्कराते चलो।

जय - जयकार लगाते चलो॥

दीपक बनो ,अंधेरा हरो।

प्रभु का नाम लेते रहो॥

आगे बढ़ो ,कभी न रुको।

जय - जयकार लगाते रहो॥

गाते चलो ,मुस्कराते चलो।

जय - जयकार लगाते चलो॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

काम करो ,प्रभु का नाम जपो ।

गले से गले लगाते चलो ॥

आगे बढ़ो मंजिल धरो ।

जय - जयकार लगाते रहो ॥

गाते चलो ,मुस्कराते चलो ।

जय - जयकार लगाते चलो ॥

शिवभक्त पढ़ो शिवभक्त बनो ।

देश का नाम रोशन करो ॥

मंजिल पहुँचकर तब ही रूको ।

भोले शंकर की जयकार लगाते चलो ॥

गाते चलो ,मुस्कराते चलो ।

जय - जयकार लगाते चलो ॥

॥ खुश रहो ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II